Dr. Guddy Kumari

(Guest lecturer)

History Deptt.

A.N.D. College,Patory(Samastipur)

B.A.(H) Part-I, History

LECTURE - 7..

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें □□□

https://youtu.be/LzosHCaKSRE

■ शुंग वंश : पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियां।

मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत भारत में ब्राह्मण साम्राज्य का उदय हुआ। ब्राह्मण साम्राज्य के अंतर्गत प्रमुख शासक वंश थे:–

1. शुंग वंश

2.कण्व वंश

3.आंध्र सातवाहन वंश

4.वाकाटक वंश..

▶शुंग वंश के प्रमुख शासक एवं उनकी उपलब्धियां....

★शुंग वंश (185 –73 ई.पू.)

शुंग वंश की स्थापना 185 ई. पू.में पुष्यमित्र शुंग द्वारा अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की हत्या कर की गई। पुष्यमित्र शुंग मौर्य की सेना का सेनापति था। महाकवि बाणभटट ने 'हर्ष चरित' में लिखा कि सेनापति पुष्यमित्र ने अपने स्वामी बृहद्रथ मौर्य को सेनाओं

DR.GUDDY KUMARI(A.N.D COLLEGE)

का निरीक्षण कराते समय कुचल डाला क्योंकि वह राज शपथ निभाने में असमर्थ था। इससे यह स्पष्ट होता है कि मौर्य सम्राट बृहद्रथ प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ था, क्योंकि यूनानी सेनाएं पाटलिपुत्र तक पहुंच गई थी संभवत उपर्युक्त कारण ही पुष्यमित्र को शुंग वंश की स्थापना में सहयोग दिए। इस वंश ने 112 वर्षों तक शासन किया।

★ शुग वंश के इतिहास के जानकारी के प्रमुख स्रोत:–

● पुराण

● बाण के हर्षचरित

● पतञ्जलि के महाभाष्य

● कालिदास के मालविकाग्निमित्रम्

● गार्गीसंहिता

● अयोध्या (उतर प्रदेश) से प्राप्त शिलालेख.

●दिव्यावदान

● तारानाथ की रचना

★ पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियाँ :–

पुष्यमित्र शुंग वंश का संस्थापक था। वह सेनापति के नाम से ही प्रख्यात था। उसने करीब 36 वर्षों तक शासन किया था। उस के शासन काल के सबसे प्रमुख घटना थी विदर्भ के साथ युद्ध एवं यवनों के साथ युद्ध। यवनो के साथ दो बार युद्ध लड़े गए।

●विदर्भ के साथ युद्ध – पुष्यमित्र के शासनकाल के सर्वप्रथम घटना थी विदर्भ से युद्ध। कालिदास द्वारा रचित मालविकाग्निमित्रम से विदर्भ के साथ युद्ध की जानकारी प्राप्त होती है। यह युद्ध पुष्य मित्र के पुत्र अग्नि मित्र एवं विदर्भ के गवर्नर

DI.GUDDY KUMARI(A.N.D COLLEGE)

यज्ञसेन के मध्य हुआ। इसमें यज्ञसेन की पराजय हुई। इस युद्ध में शुंग सेना का सेनापति वीरसेन को नियुक्त किया गया था, बाद में विदर्भ जितने के बाद अग्नि मित्र और वीरसेन ने विदर्भ को आपस में बाट कर वरद नदी को दोनों राज्यों के मध्य की सीमा बनाई।

● यवनों के साथ दो युद्ध:– पुष्य मित्र के शासनकाल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी यवनों का आक्रमण। गार्गी संहिता में वर्णित यवन युद्ध अत्यंत ही भीषण युद्ध था। संभवत: प्रथम युद्ध में यवन सेना का नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया था। कालिदास द्वारा रचित मालविकाग्निमित्रम में वर्णित द्वितीय यवन शुंग संघर्ष में संभवत: पुष्यमित्र शुंग के पुत्र वसुमित्र ने शुंग सेना का प्रतिनिधित्व किया। यह युद्ध सिंधु नदी के तट पर लड़ा गया जिसमें वसुमित्र ने यवन सेनापति मेनांडर को हराया। संभवत यह आक्रमण पतंजलि के जीवनकाल में ही हुआ था।

● अश्वमेघ यज्ञ द्वारा विजय की घोषणा:– पुष्य मित्र ने यवन युद्ध के महान विजय के उपलक्ष में दो अश्वमेध यज्ञ किया। दूसरे अश्वमेघ यज्ञ के समय स्वयं पतंजलि ने पुरोहित का काम किया था।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उसे पुष्यमित्र का साम्राज्य विस्तार पश्चिम के प्रदेश (पंजाब में जालंधर एवं साकल) मध्य भारत, दक्षिण में नर्मदा तक के दक्षिणी राज्य उसके साम्राज्य में शामिल थे। पाटलिपुत्र, अयोध्या एवं विदिशा नामक नगर भी उस के राज्य में शामिल थे। उसने विदिशा को अपनी राजधानी बनाया था। इस प्रकार 112 वर्ष के शासन के बाद शुंग वंश का पतन हो गया।

●धार्मिक उपलब्धियाँ :–

कुछ विद्वान जैसे विंसेंट स्मिथ, N.N. घोष, N.G. मजूमदार आदि ने पुष्य मित्र को बौद्ध धर्म का विरोधी एवं ब्राह्मण धर्म का अनन्य समर्थक मानते हैं। इन विद्वानों का यह मानना है कि पुष्य मित्र ने अशोक द्वारा बनवा गए 84000 स्तुपों को नष्ट कर दिया था। पुष्य मित्र ने पाटलीपुत्र में स्थित कुकुट राम विहार को तीन बार नष्ट

Dr. GUDDY KUMARI(A.N.D COLLEGE)

करवाने का प्रयत्न किया पर तीनो ही बार भयानक आकाशवाणी होने के कारण असफल रहा।

दूसरी ओर विद्वानों का एक दल मानता है कि पुष्य मित्र बौद्ध धर्म का विरोधी नहीं था। इस दल में शामिल राय चौधरी ने शुंग के समय में विकसित बौद्ध स्मारक एवं शिल्प का वर्णन किया है। रामाशंकर त्रिपाठी का मानना है कि भरहुत के स्तूप एवं वेदिकाएँ जिन पर 'सुगनमरजे' लेख उत्कीर्ण है निसंदेह शुंग काल में निर्मित किए गए हैं। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि यदि शुंग लोग बौद्ध धर्म के विरोधी होते तो उनके समय में इतने अद्भुत स्मारक न बनते।

इस तरह पुष्य मित्र को मगध में प्रथम ब्राह्मण राज्य स्थापित करने एवं ब्राह्मण धर्म के पुनरुद्धार का श्रेय दिया जा सकता है। ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के अंतर्गत पुष्य मित्र ने कुछ समय पहले विलुप्त हुए अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान को पुनः प्रारंभ करवाया और साथ ही भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उसे पुष्यमित्र शुंग के प्रयास से ही अष्टाध्याई (पाणिनी)जैसे ग्रंथ पर पतंजलि ने महाभाष्य लिखा। मनु ने मनुस्मृति लिखी। कुछ विद्वानों के अनुसार महाभारत के शांति पर्व एवं अश्वमेघ पर्व का विस्तार भी इसी काल में हुआ।

● शुंगकालीन स्थापत्यकला :–

स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी इस काल ने एक आदर्श स्थापित किया। शुंग के समय में ही बौद्ध स्तुपों में लगे लकड़ी के जंगल पत्थर के जंगले में बदल गए तथा एक भव्य पत्थर के द्वार का निर्माण किया गया। भारहुत बौद्ध स्तूप में लगे जंगलो ने निश्चित रुप से शुंग का स्थान इतिहास में अमर कर दिया। शुंग काल के कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्मारक के रूप में पुना के निकट भज नामक स्थान पर स्थित एक विहार, भज में ही एक बड़ा चैत्य एवं चट्टान को काटकर बनाए गए स्तूप, अजंता में चैत्य कक्ष नंबर 9, भारहुत में वृक्ष देवता, अमरावती में निर्मित स्तूप, बेसनगर का गरुड़ध्वज, बोधगया का जंगला एवं नासिक के चैत्य कक्ष आदी हैं। सांची के महान स्तूप का कटघड़ा भी

Dr.GUDDY KUMARI(A.N.D COLLEGE)

इसी काल का है। शुंग के समय में ही स्थापित बेसनगर गरुड़ स्तंभ तत्कालीन पहला गरुड़स्तंभ था जो ब्राह्मण धर्म (भागवत धर्म) से संबंधित था।

इस तरह साहित्य एवं कला के क्षेत्र में शुंग काल के महत्व को स्वीकारते हुए उसकी तुलना गुप्त काल से की जा सकती है।

★ पुष्य मित्र शुंग के उतराधिकारी: –

- अग्निमित्र (148–140 ई.पू.) पुराण के अनुसार
- वसुज्येष्ठ (140–133 ई.पू.) "
- वसुमित्र (133–123 ई.पू.) "
- भद्रक (123–114 ई.पू.) "
- भागवत (114– 82 ई.पू.) "
- देवभूति। (82 – 73 ई.पू.) "

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr.GUDDY KUMARI(A.N.D COLLEGE)